हिन्दी व भोजपुरी गीतों का संकलन

संघर्ष के साल गीत

छत्तीसगढ़ माइन्स श्रमिक संघ

लोक साहित्य परिषद

प्रकाशन काल : 14 जनवरी, 2004

मधुसूदन विश्वकर्मा की गीत-कविताओं का एक संकलन

सहयोग राशि : 2/- रूपये

प्रकाशक : लोक साहित्य परिषद
द्वारा छत्तीसगढ़ मुक्ति मोर्चा, सी. एम. एस. एस. आफिस,
दल्ली-राजहरा, दुर्ग (छत्तीसगढ़) पिन - 491228

मुद्रक : साहू प्रिंटिंग प्रेस, दल्ली-राजहरा

1.	लाल-हरा झंडा को देखो.....	1
2.	28 मार्च सन् 1991 का हाल	2
3.	चलवे करी ये साथी, चलवे करी।	3
4.	जागो मजदूर किसान.....	4
5.	दीदी अनुसूईया, भाई सुदामा	5
6.	गरीब मजदूरों को आखिर सताते हो क्यों ?	6
7.	शोषित मजदूर की आत्मा की आवाज	8

1

लाल हरा झण्डा को देखो, इसमें कितना शान भरा,
इतिहास के पन्नों को देखो, इसमें कितना मान भरा।
दल्ली की पहाड़ी को देखो, इसका मान बताती है,
उन अमर शहीदों की वेदी, हम सबको याद दिलाती है।
दल्ली के मजदूर खुशियों से इसे निर्माण किये,
छत्तीसगढ़ मुक्ति मोर्चा के खातिर जन-जन में आवाज दिये।
दल्ली के भाई सुदामा ने खून से इसको सींचा है,
एक होकर सभी लोग इस झण्डा के नीचे हैं।
माता अनुसूईया की वीरता आज भी हमें सिखलाती है,
संगठन के बारे में हम सबको मार्ग दिखाती है।
छत्तीसगढ़ के कोने-कोने इस झण्डा लहर-लहर लहराता है,
उन अमर शहीदों की बात हमें बार-बार समझाता है।

2

28 मार्च सन् 1991 का हाल

सुनिये सज्जन भाई, एक ऐसा हाल बताता हूँ,
टेड़ेसरा में भोजवानी आये, उनका हाल सुनाता हूँ।
28 मार्च मंत्री जी आयेंगे, अखबारों से जब खबर मिला,
मजदूर किसानों के दिल में अरमानों का फूल खिला।
भूमिपूजन हेतु भोजवानी ज्यों ही गाँव में आये,
इतने दिन तुम कहाँ रहे, गाँव वाले सब आवाज दिये।
जवाब न दिये मंत्री जी ने, न तो कुछ भी बात किये,
लाइट बुझाया गाड़ी के और कोपडीह की ओर भाग गये।
शाम को साढ़े सात बजे मंत्री फिर वापस आये,
गाँव के जितने चमचे, सबको अपने पास बुलवा लिये।
देकर पैसे चमचों को अपना धाक जमाये,
लाल-हरा वालों को गाँव से भगाओ, आवाज चमचे उठाये।
गाँव के जितने किसान हैं, बात उनको बर्दाश्त न हुई,
पैसे खाये हो तुम चमचे, ऐसी सबने आवाज दी।
इनकी माँगे जायज हैं, सही-सही बतलाता हूँ,
टेड़ेसरा में भोजवानी आये. उनका हाल बताता हूँ।

(28 मार्च, 1991 को मध्यप्रदेश के श्रम मंत्री लीलाराम भोजवानी टेड़ेसरा में आने पर उनको ग्रामवासी का प्रबल विरोध का सामना करना पड़ा। प्रस्तुत है उस दिन की घटना के बारे में एक कविता।)

3

चलबे करी ये साथी, चलबे करी।
कबले जुल्मी अत्याचारी चलबे करी ?
खेत में किसानी करी, बोई हम धनवां,
कड़कल धूप में, चुवाइलां पसीनवां,
सोचीला पेट अब भरबे करी,
कबले जुल्मी अत्याचारिया चलबे करी ?
खेत खार बेची, आपन लइका पढ़ाई,
घुस के जमाना बाटे, पइसां कहां पायी
कईसे के दुख मोरा टरबे करी,
कबले जुल्मी अत्याचारिया चलबे करी ?
कल कारखानवां में कमवां करावें,
आधा पेट भोजन पे, दिन भर खटावें
केकरा के दुःख हम कहिबे करी,
कबले जुल्मी अत्याचारिया चलबे करी ?
रोटी के सवाल करी, पुलिस बोलावे,
भेजी केनी जेलिया में हमें तड़पावें,
केहु न के दुःखवा मोरा सूनबे करी,
कबले जुल्मी अत्याचारिया चलबे करी ?
मजदूर किसान मिली एकता बनाव,
सबके हो दुःखवा में हथवा बटाव,
तब हो तअ सुख के सूरज उगबे करी,
कबले जुल्मी अत्याचारिया चलबे करी ?

4

जागो मजदूर किसान, देश के तुम ही हो महान,
लाल हरा पहिचान, सोचो सुन्दर समय।
ऊपर शहीद की निशानी, जाओ मजदूर पहिचानी,
ना तो होही बड़ हानि, सोचो सुन्दर समय।
किसान नांगर खुब चलावें, धरती को हरिहर बनावें,
खेत में धान उपजावें, सोचो सुन्दर समय।
किसान मजदूर दोनों भाई, दे दो शोषण भगाई,
अब घुसखोरी दो मिटाई, सोचो सुन्दर समय।
पूंजीपतियन की शान, रखे पुलिस बलवान,
बनी गये है मशान, सोचो निर्दय समय।
दे दो शासन पर ध्यान, सबको करे परेशान,
जाकर नाम है महान, सोचो सुन्दर समय।
कैसा पुलिसों के ब्योहार, करें खुनी त्योहार,
खुन बहाते हैं तोहार, सोचो निर्दय समय।
समय ऐसा लाओ, क्रांति मिलि लगाओ,
रातें चैन बिताओ, सोचो सुन्दर समय।

5

दीदी अनुसूईया, भाई सुदामा

दीदी अनुसूईया नयनवां की तारा बन गयी,
डुबते मजदूरों की नइया की सहारा बन गयी।
छत्तीसगढ़ मुक्ति मोर्चा की पहली शहीद नारी हो,
पुलिस पापी दरद न जाने, दिहले गोली मारी हो।
सारी दुनिया से दीदी ने यारा बन गयी,
डुबते मजदूरों की नइया की सहारा बन गयी।
दल्ली-राजहरा के हीरा भी जन्नत में चली गइली हो,
गोली खाके अपन दीदी, रास्ता हमें बतवली हो।
मजदूरों के आंदोलन की सहारा बन गयी,
डुबते मजदूरों की नइया की सहारा बन गयी।
भाई सुदामा छत्तीसगढ़ के रहे बालक वीर हो,
पुलिस पापी पाप कमइले, लीहलें हीरा छीन हो।
इनकी निशानी सड़क के किनारे बन गयी,
डुबते मजदूरों की नइया की सहारा बन गयी।

शहीद साथी अमर रहे!

(अनुसूईया बाई, सुदामा व और नी श्रमिक साथी 1977 के दल्ली-राजहरा गोली कांड में शहीद हुए थे।)

र : गरीब मजदूर को आखिर सताते हो क्यों ?
उनकी मांगों को आखिर दबाते हो क्यों ?
जो तुम्हारे लिये खुन पानी किये,
उन पर अन्याय कराते हो क्यों ?
नगर भिलाई के आंदोलन का यह दास्तान रहा,
25 जुलाई 1991रहा,
भूखे मजदूरों पर पुलिस की लाठी गोली चली ।

गजल : भिलाई आंदोलन की है यह कहानी,
जो लाल हरा के तले में हुआ,
एक दरोगा की है यह कहानी,
जिसको पैसों का लालच हुआ ।

शेर : सुनो दोस्तों, एक बात मैं बताता हूँ ।
भिलाई नगर का हाल मैं सुनाता हूँ ।
रहा गद्दार मालिक कैलाशपति केडिया था,
जैसे सब जानवर में एक भेड़िया था,

गजल : सुनकर आँखों में आता है पानी,
मजदूरों पर जो आपत पड़ी,
सन् 91 की है यह कहानी,
पूंजीपतियों से यह शासन बिका ।

शेर : जामुल थाना का टी. आई. वह सलाम रहा,
घुस खाने में भाई, इनका बड़ा नाम रहा,
एक दिन सलाम को केडिया जी बुलवाये,
आंदोलन तोड़ने का काम अपना फरमाये,
कहे सलाम, मि. केडिया सुन लिजीए,
काम होने से पहले पैसे तो कुछ दिजीए ।

गजल : अपनी वर्दी मोल किये हैं, इनके चेहरे पर सुर्रियां छाई,
देखो कैसा राज हो भाई, रिश्वत लेकर चले हैं सिपाही ।

शेर : तारीख 25 जून मंगलवार रहा,
लाठी चलाने को पुलिस तैयार रही,
मजदूर रैली लेकर जामुल जब आये,
मार-मार कर पुलिस मजदूरों को गिराये।

गजल : देश का कैसा कानून है भाई,
छिप जाता है सच्चाई।

विदेशिया धुन : मजदूर साथिया के कबने गलतिया से,
लाठी से मारी के गिरबले रे पपीया।
लाठी चलवले पापी, दवा न करवले पापी,
बदवा में जेलिया पठवले रे पपीया।

आल्हा : जबने श्रमिक वन के मजदूर नाम दिहले,
तेरा नेता महान,
ओही रे मजदूर वन के कारण आम्बेडकर,
सोची के बनवले विशेष संविधान,
जबने मजदूर बनके उपकार के करनवा,
सरकारी कानून बनल श्रम हो विभाग।
ओ ही रे मजदूर वल के ना कोई सुनवइया,
रो वलें आम्बेडकर ले के दुःख गहरा,
आज पैसा पे बिकाइल संविधान।
लिखने मधुसूदन ले के दुःख गहरा,
आज पैसा पे बिकाइल संविधान।

घूसखोरों को कैद करो, निर्दोषियों को रिहा करो!

(25 जून 91 सुबह जब मजदूरों का शांतिपूर्ण जुलूस जामुल थाना के सामने गुजर रहा था, सुनियोजित ढंग से पुलिस ने उन पर हमला किया। मजदूरों पर बेरहमी से लाठियाँ चलायी गयी, मजदूर जब डटे रहे तो उन्हें तितर-वितर करने के लिए हवाई फायरिंग हुई। अनूपसिंह, भीमराव बागड़े आदि कई श्रमिक नेता को थाना में लाकर अधमरे होते तक पीटा गया। सौ से अधिक नारी व पुरूष श्रमिक गिरफ्तार हुए, झुठे प्रकरणों में फंसाकर उन्हें हफ्तों तक जेल में सड़ाया गया।)

7

शोषित मजदूर की आत्मा की आवाज

शोषकों अब सावधान ! शोषित वर्ग ललकारा है,
हर जोर जुल्म की टक्कर में, संघर्ष हमारा नारा है।

ठेकेदारी प्रथा चलाकर मजदूरों का शोषण खूब किया,
पूंजी का घाटा दिखाकर सरकार को चकमा खूब दिया,
ठेकादारी नहीं चलेगी, जन-जन का ये नारा है,
हर जोर जुल्म की टक्कर में, संघर्ष हमारा नारा है।

रोटी की माँग को लेकर, जब मजदूर आवाज लगाते हैं,
लाठी-गोली चलाकर वादे ठुकराये जाते हैं,
लाल-हरा झण्डा लेकर, मजदूरों ने ललकारा है,
हर जोर जुल्म की टक्कर में, संघर्ष हमारा नारा है।

पैसे की करामत तो देखो, बिक गया श्रम विभाग हे,
राजमंत्री नेता जी बिक गये, पुलिस हुई दलाल हे,
देखो इनको शरम न आती, क्या दलितों के ये सहारा है ?
हर जोर जुल्म की टक्कर में, संघर्ष हमारा नारा है।

इसी तरह अगर अन्याय बढ़े तो, प्रतिरोध जरूर बन जायेगा,
शोषण-दमन-अत्याचार के खिलाफ, हथियार मजदूर उठायेगा,
बारिश होगी खून की, कहना अरमान हमारा है,
हर जोर जुल्म की टक्कर में, संघर्ष हमारा नारा है।

लोक साहित्य परिषद के प्रकाशन

मिल-जुल के सबो झन शोषण ला टारबो
छत्तीसगढ़ दाई के हावे रे गुहार .....
फागूराम यादव के चुने हुए गीत 5 रूपये

गीत कविताओं का संकलन

संघर्ष की पुकार 1 रूपये

संघर्ष की सात गीत 2 रूपये

भारत के ट्रेड युनियन आंदोलन की समस्याऐं

छत्तीसगढ़ माइन्स श्रमिक संघ का एक लेख 2 रूपये

अर्थशास्त्र का क - ख - ग 5 रूपये

इतिहास के पन्नों से

संथाल विद्रोह की अमर कहानी 2 रूपये

मई दिन 2 रूपये

2 - 3 जून शहीद दिवस शपथ दिवस 2 रूपये

उत्तर प्रदेश का देवरिया जिला का बेलवा गांव में जन्मे मधुसूदन विश्वकर्मा की शिक्षा दसवीं तक की है। शुरू में मधुसूदन गांव का एक साइकिल सुधार का काम करते थे। तीन वर्ष पहले वे रोजगार की तलाश में छत्तीसगढ़ में आये, टेड़ेसरा का सिम्पलेक्स इंजीनियरींग फाऊण्ड्री वर्क्स में उन्हे एक नौकरी मिली। काम वेल्डर के सहायक का, मासिक वेतन सिर्फ पाँच सौ चालिस रूपये।

1990 के अन्त में भिलाई-टेड़ेसरा-उरला औद्योगिक क्षेत्र में मजदूर आंदोलन की आंधी आयी। कारखाने-कारखाने में मजदूर स्थायी नौकरी, जीने के लायक वेतन आदि जायज मांग उठाये, हाथ में छत्तीसगढ़ मुक्ति मोर्चा का लाल-हरा झण्डा थाम लिये। टेड़ेसरा में भी प्रगतिशील इंजीनियरींग श्रमिक संघ की शाखा बनी।

फिर शुरू हुआ दमन का दौर। युनियन बनाने के अपराध में हजारों मजदूरों को नौकरी से निकाला गया, मालिक के गुण्डे बार-बार मजदूरों पर हमला किये। पुलिस प्रशासन मालिकों के पक्ष लिये, हजारों मजदूरों को झुठे प्रकरणों में फंसाया गया, मजदूर नेताओं को जेल की काली कोठरी में सड़ाया गया, आंदोलनरत मजदूरों को बार-बार निर्मम पुलिसी बर्बरता के सामना करना पड़ा। मजदूर लेकिन हटे नहीं डटे रहे।

एतिहासिक भिलाई आंदोलन मजदूर वर्ग के अंदर से कई कलाकार पैदा किया है। कामरेड मधुसूदन उनमें से एक है।